विद्याभवन , बालिका विद्यापीठ , लक्खीसराय रूपम कुमारी , वर्ग-दशम, विषय -हिन्दी दिनांक- २१/५/२०

||अध्ययन-सामग्री ||

आओ दीया जलाएँ .....

उदय किसी का अचानक नहीं होता ,-सूर्य भी धीरे-धीरे निकलता है और ऊपर उठता है। धैर्य और तपस्या जिनमें है, वही इस संसार को प्रकाशित कर सकता है ।

इस भीषण समय में स्वयं को उबारने हेतु धैर्य और तपस्या हमारे दो मजबूत आधार हैं । तपस्या का तात्पर्य सिर्फ गुफाओं में

की गई तपस्या ही नहीं, बल्कि अभी हम सबों के द्वारा घरों में कैद होकर कम संसाधनों में जीना तथा कई एक के द्वारा तो अपने परिवार से दूर एकांत हुआ अकेले अनेक तरह की इच्छा पर लगाम साधना भी तपस्या का ही एक उदाहरण है । मजदूरों द्वारा हजार -हजार किलोमीटर परिवार सहित पैदल चलना भी किसी तप से कम नहीं है ।

बस समय की दरकार यही है !

हमें धैर्य और तप का तेल डाल उम्मीद का दीया जलाए रखना होगा !

कभी तो धरा का अंधेरा मिटेगा.....

महत्वपूर्ण तथ्य :

- ***भारत के प्रसिद्ध हिंदी व्यंग्य रचनाकार शरद जोशी का जन्म 21 मई 1931 ईस्वी में हुआ।***
- ***21 मई 1991 ईस्वी में भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या हुई थी।***

वार्तालाप :

पिछली दो कक्षा से हम' माता का अंचल 'पाठ को पढ़ते आ रहे हैं .... आज फिर उसी पाठ का शेषांश लेकर उपस्थित हूँ -

उनके साथ हंसते- हंसते जब हम घर आते तब उनके साथ ही हम भी चौके पर खाने बैठते थे । वह हमें अपने ही हाथ से, फूल के एक कटोरे में गोरस और भात सानकर खिलाते थे । जब हम खा कर अफर जाते तब मैया थोड़ा और खिलाने के लिए हठ करती थी । वह बाबूजी से कहने लगती - आप तो चार चार दाने का कौर बच्चे के मुंह में देते जाते हैं; इससे वह थोड़ा खाने पर भी समझ लेता है कि हम बहुत खा गए; आप खिलाने का ढंग नहीं जानते - बच्चे को भर - मुँह खिलाना चाहिए ।

जब खाएगा बड़े-बड़े कौर, तब पाएगा
दुनिया में ठौर ।

देखिए मैं खिलाती हूं । मरदुए क्या जानें कि बच्चे को कैसे खिलाना चाहिए ,और

महतारी के हाथ से खाने पर बच्चों का पेट भी भरता है ।

यह थाली में दही -भात सानती और अलग-अलग तोता, मैना, कबूतर, हंस, मोर आदि के बनावटी नाम से कौर बनाकर यह कहते हुए खिलाती जाती कि जल्दी खा लो, नहीं तो उड़ जाएंगे ;पर हम उन्हें इतनी जल्दी उड़ा जाते थे उड़ने का मौका ही नहीं मिलता था ।

जब हम बनावटी चिड़ियों को चट कर जाते थे तब बाबूजी कहने लगते -अच्छा ,अब तुम राजा' हो, जाओ खेलो ।

बस हम उठकर उछलने -कूदने लगते थे । फिर रस्सी में बंधा हुआ काठ का घोड़ा

लेकर नंग- धड़ंग बाहर गली में निकल जाते थे ।

जब कभी मैया हमें अचानक पकड़ पाती तब हमारे लाख छटपटाने पर भी एक चुल्लू कड़वा तेल हमारे सिर पर डाल देती थी । हम रोने लगते और बाबूजी उस पर बिगड़ खड़े होते ; पर वह हमारे सिर में तेल बोथकर हमें उबटकर ही छोड़ती थी । फिर हमारी नाभि और लिलार में काजल की बिंदी लगाकर चोटी गूँथती और उसमें फूलदार लट्टु बांध का रंगीन कुर्ता -टोपी पहना देती थी ।हम खा से 'कन्हैया बनकर बाबूजी की गोद में सिसकते-सिसकते बाहर आते थे।

बाहर आते ही हमारी बाट जोहने वाला बालकों का एक झुंड मिल जाता था । हम उन खेल के साथियों को देखते ही, सिसकना भूलकर, बाबूजी की गोद से उतर जाते और अपने हमजोलि यों के दल में मिलकर तमाशा करने लग जाते थे ।

तमाशे भी ऐसे वैसे नहीं, तरह-तरह के नाटक ! चबूतरे का एक कोना ही नाटक - घर बनता था । बाबूजी जिस पर छोटी चौकी पर बैठकर नहाते थे, वही रंगमंच बनती । उसी पर सरकंडे के खंभों पर कागज का चँदोवा तानकर मिठाइयों की दुकान लगाई जाती । उसमें चिलम के खोंचे पर कपड़े के थालों में ढेले के लड्डू, पत्तों की पूड़ी – कचौड़ियाँ, गीली मिट्टी की जलेबियां

,फूटे घड़े के टुकड़ों के बताशे आदि मिठाइयां सजाई जातीं । ठीकरों के बटखरें और जस्ते के छोटे-छोटे टुकड़ों के पैसे बनते । हमीं लोग खरीदार और हमीं लोग दुकानदार । बाबूजी भी दो-चार गोरखपुरिये पैसे खरीद लेते थे..... शेष कल

शब्दार्थ :

ठौर -स्थान, कड़वा तेल -सरसों का तेल , चंदोआ – छोटा शामियाना ,जीमना -भोजन करना ।

गृहकार्य :

- पाठ को अच्छी तरह से पढ़ें और कॉपी में एकत्रित करें ।

- ***<u>मां के द्वारा बालपन में लेखक की सजावट किस प्रकार की होती थी? उसका वर्णन अपने शब्दों में करें ।</u>***
- ***<u>लेखक के बालपन के खेल के प्रकारों का वर्णन करें ।</u>***
- ***<u> मां लेखक को किस प्रकार खाना खिलाया करती थी ?</u>***
-
- ***<u>धन्यवाद !</u>***